मलूक दास के दोहे (१४०)

राम सुमिर ले रे मना, बिरथा न जन्म गँवाउ ।
औसर बीता जाता है, बहुरि न ऐसा दाँउ ॥

राम भजन कर लेहि मन, जब लगि तन कुसलात ।
नदी नीर जेंउ जन्म पद, मारू मारू किए जात ॥

रामहिं सुमिरहु रैन दिन, छाँडि कर्म फल आस ।
संतन की सेवा करत, मिलिहैं हरि सुख रास ॥

अब सागर के तरन को, है हरि नाम अधार ।
सो बिसरायो सहज ही, मन मूढ़ गँवार ॥

मेरो कछु न जाइहै, अंत सोई पछताइ ।
जो हरि नाम बिसारिहै, वादि क्रोध लपटाइ ॥

व्याकुल भया बिनती करी, राखहु सरनि मुरारि ।
मोरे कछु न बसात है, लीजै मोहि उधारि ॥

क्रोध तो काला नाग है, काम तो परकट काल ।
आपु आपु को ऐंचते, करि डारा बेहाल ॥

एक कनक अरु कामनी, ए दोऊ बटमार ।
मीठी छूरी लाइ के, मारा सब संसार ॥

उपजत बिनसत थकि परा, जिया उठा अकुलाइ ।
कहै मलूक बहु भरमिया, अब नहिं भरमा जाइ ॥

अंत एक दिन मरहुगे, गलि गलि जैहैं चाम ।
ऐसी झूठी देह ते, लेहु न साँचा नाम ॥

सुंदर देह पाइ के, मत कोई करै गुमान ।
काल दरेरा खायगा, क्या बूढ़ा क्या ज्वान ॥

सुंदर देह देखि कै, उपजत है अनुराग ।
मढ़ी न होती चाम तो, जीवत खाते काग ॥

इस जीने का गर्व क्या, कहा देह की प्रीत ।
बात कहत ढह जात है, ज्यों बालू की भीत ॥

मरने मरने भाँति है, जो मरि जानै कोइ ।
राम द्वारे जो मरे, बहुरि न मरना होय ॥

मुवा मुई को ब्याहता, मुवा ब्याहि कै देह ।
मुए बरातहिं जात हैं, मुवा बधाइ लेइ ॥

इन की यह गति देखि के, जहँ तँह फिरौं उदास ।
अजर अमर प्रभु पाइया, कहत मलूकदास ॥

भजि ले चरन मुरारि के, जीति सार न हार ।
कहै मलूक हरि चरन बिनु, जनमि मुए कै बार ॥

कहत मलूक सपूत सो, भगति करै चित लाइ ।
जरा मरन ते बीच परै, अजर अमर होइ जाइ ॥

पसु पंछी तिनते भले, जो हरि सुमिरत नाहिं ।
जीवन ही भूतन भजै, ते नर नरकहिं जाहिं ॥

जा घर भगति न भागवात, संत नहीं मेहमान ।
ता घर जम डेरा कियो, जिय तेहि परो मसान ॥

हाक सुनी गजराज की, चौघाए बृजराज ।
गोली लागै पहिले ही, पाछे होत अवाज ॥

दया धरम हिरदे बसे, बोले अमृत बैन ।
तेई ऊँचे जानिए , जिनके नीचे नैन ॥

भेदी होइ सो जाने, नट बाजी संसार ।
झूठे नाते जगत के , तात मात सुत नार ॥

और सकल सब धंध है, साँचा तू करतार ।
जग फुलवारी ज्यों रची, तिन बहु रंग सँवार ॥

अंत न तेरा लखि परै, अलख निरंजन राइ ।
आसा तृसना लाइ तिन, दिया जगत भरमाइ ॥

सब घट मेरा साँइया, दुतिया भाउ बिसारि ।
हित सों पूजा कीजिए, मन बच कर्म बिचारि ॥

जाति हमारी आतमा, नाम हमारा राम ।
पाँच तत्व का पूतरा, आइ किया विश्राम ॥

मानि लेहु हरि आरती, भइ मोते बड़ि चूक ।
एक बार करि दो छिमा, तेरो दास मलूक ॥

सुनत पतित हरि को विरद, अधम उधारन हार ।
अब कोउ नहिं अटकिहै, मोसौं उतरो पार ॥

ध्यान धारि निज रूप को, काया कीजै भेंट ।
छूट जाय भय काल को, हरि सों बाढ़ै हेत ॥

प्रीतम राम सँभारिये, मन बच कर्म बिचारि ।
मीत कन्हाई भगत का, भाषत वेद पुकारि ॥

हरि दरसन के चाउ ते, लागी हरि सों प्रीति ।
बिसरी कुल मरजाद सब, प्रेम अटपटी रीति ॥

प्रेम भगति उर आनि कै, निज सरूप धरि ध्यान ।
अपनो विरद सँभारि कै, तब मिलिहै भगवान ॥

महिमा प्रेम भगति की, बरनौं कहा विशेष ।
सो हरि देखौं नैन भरि, जाकौ रूप न देख ॥

षट दरसन दरवेस पुनि, संन्यासी भगवान ।
प्रेम बिना पहुँचै नहीं, दुर्लभ पद निर्वान ॥

प्रेम परम पद पाइए, प्रेम उतारे पार ।
प्रेम भगति की महिमा, श्री मुख कही मुरार ॥

प्रेम भगति नहिं छँडिए, जब लगि घट में प्रान ।
जासों हित कीन्हें मुझे, आइ मिले भगवान ॥

प्रेम प्रीति सों आरती, कीजै बारंबार ।
आरति आरतवंत की, सहि नहिं सकत मुरारि ॥

प्रेम भगति जाके घट, पूरन ग्यानी सोइ ।
कह मलूक जल तरंग ज्यों, कहत सुनत में दोइ ॥

जा हरि के दीदार को, भया दीवाना जीव ।
सतगुरू की दया भई, सहज मिला सो पीव ॥

मैं चूँकि निरभय भया, आई मन परतीति ।
धर्म–कर्म सब छुटि गया, लागी हरि सों प्रीति ॥

सोवत राम प्रताप अब, जागि मरै बलाइ ।
उपजो ब्रह्मानंद सुख, दुख सब गए बिलाइ ॥

तीन लोक में जानिया, बैठा भया सलूक ।
गुरु गोविन्द किरपा करी, भया ‘ मलूक ’ मलूक ॥

हृदय राम मन हरि बसै, रघुपति कीन्ह निबाहु ।
दास मलूका यों कहै, भयो चोर ते साहु ॥

घरी घरी हरि गुन रटत, गै सब विघन बिलाय ।
दास मलूका सुखी भए, श्री गुरु राम सहाय ॥

राम नाम पूजा मेरी, सुमिरन मेरे राम ।
तीरथ गंगा आदि सब, मेरे हरि के नाम ॥

संध्या तरपन सब तजे, तीरथ कबहुँ न जाउँ ।
हरि हीरा हृदय बसै, ताहि पैठि अन्हवाउँ ॥

वेद पुरान सासतर, पूजा क्रिया अचार ।
एक पुरुष के आसरे, तजिए सब बेवहार ॥

सर्व व्यापक आत्मा, सतगुरु दियो बताइ ।
अब क्यों पाती तोरि के ,प्रतिमा पूजौं जाइ ॥

उहाँ न कबहुँ जाइए, जहाँ न हरि का नाम ।
दीगंबर के गाँव में, धोबी का क्या काम ॥

राम राम के नाम को, जहाँ नहीं लवलेस ।
पानी तहाँ न पीजिए, परिहरिए सो देस ॥

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय ।
कोटि बार समझाइया, कौआ हंस न होय ॥

दुःखदायी सबतें बुरा, जानत हैं सब कोय ।
कहत मलूक कंटक मुआ, धरती हलकी होय ॥

माया मगन महंत के, तुम मत बैठो पास ।
कौड़ी कारन लड़ि मरै, कथनी कथै पचास ॥

चार पहर दिन होत रसोई, तनिक न निकसत टूक ।
कह मलूक ता मंदिर में, सदा रहत है भूत ॥

आदर मान महत्व सत, बालापन को नेह ।
ये चारों तब हीं गए, जबहिं कहा कछु देह ॥

जेते सुख संसार के ,इकठे किए बटोर ।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोर ॥

हरि रस में नाहीं रचा, किया काँच ब्योहार ।
कह मलूक वो ही पचा, प्रभुता को संसार ॥

उतरे आये सराय में, जाना है बड़ कोह ।
अटका आकिल प्रेम बस, ली भठियारी मोह ॥

गर्व भुलाने देह के, रचि रचि बाँधे पाग ।
सो देहि नित देखि के, चोंच सँवारे काग ॥

मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय ।
ऐसा कोई न मिला, जो फेर उठावै आय ॥

जागो रे अब जागो भैया, सिर पर जम धार ।
ना जाने कौने घरी, कहि लै जइहै मार ॥

कुंजर चींटी पशु नर, सब में साहेब एक ।
काटे गला खोदाए का, करै सूरमा लेख ॥

साधो दुनिया बावरी, पत्थर पूजन जाय ।
मलूक पूजै आत्मा, कछु माँगे कछु खाय ॥

कह मलूक हम जबहिं ते, लीन्हों हरि की ओट ।
सोवत ही सुख नींद भरि, डारि भरम की पोट ॥

जीवहुँ ते प्यारे अधिक, लागैं मोहीं राम ।
बिनु हरि नाम नहीं मुझे, और किसी से काम ॥

किरतिम देव न पूजिए, ठेस लगै फुटी जाय ।
कह मलूक शुभ आत्मा, चारों जुग ठहराय ॥

प्रेम नेम जिन न कियो, जीते नाहीं मैन ।
अलख पुरुष जिन न लख्यौ, छारि परो तेहि नैन ॥

पीर सभन की एक सी, मूरख जानत नाहिं ।
काँटा चूभे पीर होय, गला काट कोउ खाय ॥

राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहार ।
ऐसी महिमा नाम की, जार करै सब छार ॥

राम नाम औषध करौ, हिरदे राखौ याद ।
सकट में लौ लाइए, दूर करै सब वयाध ॥

नाम जहाज बिना कोउ, भवजल अगम अपार ।
तरि न सकै नारद सुक, निस्चै कियो विचार ॥

ज्यों बनिया मन अगुआ, पूँजी हरि को ध्यान ।
कहै मलूक यह लाभ बड़, भेंटो श्री भगवान ॥

सब पानी को चूपरो, एक दया जग सार ।
जिन पर आतम चीन्हिया, तेई उतरे पार ॥

करै भक्ति भगवान की, कबहुँ करै नहिं चूक ।
हरि रस में राँचौ रहै, साँची भक्ति मलूक ॥

सोई सूर सराहिए, जो लरै धनी के हेत ।
पुरजा पुरजा कटि परै, तऊ न छाँड़े खेत ॥

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय ।
कहै मलूक जहाँ संत जन, तहाँ रमैया जाय ॥

हरि की माया जग ठगै, ब्रह्मा विष्णु महेस ।
सो अजीत प्रभु आपकी, धरो मोहनी भेस ॥

कहे विवेक जग आइके , मरना है निरधार ।
पै हरि द्वारे जो मरै, मरै न दूजी बार ॥

जेते देखे आतमा, तेते सालिगराम ।
बोलनहारा पूजिए, पत्थर से क्या काम ॥

आतम राम न चीन्हहीं, पूजत फिरैं पषान ।
कैसहु मुक्ति न होयगी, केतिक सुनौ पुरान ॥

देवल पूजे कि देवता, की पूजे पहाड़ ।
पूजन को जाँता भला, पीस खाय संसार ॥

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस ।
जिनके हिरदे हरि बसै, कोटि तिरथ तिन पास ॥

हरि निर्गुन क्यों बरनिए, एक अनेक परकार ।
सोइ सब कुछ सोई, रहत सदा संसार ॥

कारन जग को ब्रह्म है, और न कोऊ आहि ।
यह प्रपंच सब ब्रह्म है, जानहु निस्चै ताहि ॥

अनंत कोटि ब्रह्मांड धरि, सब बिधि पूरत आस ।
जानै अपनी आपु गति, कहत मलूकादास ॥

कठिन पियाला प्रेम का, पिये जो हरि के साथ ।
चारों जुग माता फिरै, उतरै जिय के साथ ॥

सब कोउ साहब बंदते, हिन्दू मुसलमान ।
साहब तिनको बंदते, जिन का ठौर इमान ॥

जे दुखिया संसार में, खोवौ तिनका दुक्ख ।
दलिद्दर सौंपि मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख ॥

जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव ।
अंतरजामी जानि हैं, अंतरगत का भाव ॥

भेष फकीरी जे कटै ,मन नहिं आवै हाथ ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहब तिनके साथ ॥

मैं जाना मन मरि गया, तन करि डारा खेह ।
इस मन की परतीत क्या, मारे अनेक विदेह ॥

मन ही के संकल्प ते, भयो जो तन अभिमान ।
सो छूटै जब कीजिए, ब्रह्म नदी असनान ॥

हरि प्रसाद से पाइए, अस्थित पद निर्वान ।
कह मलूक मन के मुए, होइ न आवा जान ॥

हरि तो सों तेरे निकट, तू पुनि फिरत उदास ।
मृग कस्तूरी नाभि में, फिर फिर ढूँढै घास ॥

नाभि बसै कसूरिया, मृग निज सुधि बिसराय ।
भ्रम तो तरू बैली सकल, ढूँढे बन–बन जाय ॥

तरू बैली बन ढूँढते, सो भ्रम नित अधिकाय ।
जब थिर देखै आपू में, तब वह भ्रम नसि जाय ॥

जौं तोहूँ ज्यों मृग भ्रमहिं, छाँड़ि धरइ हरि ध्यान ।
कहै मलूक तो सहज ही, पावै पद निर्वान ॥

जरा मरन आवा गमन, पाप पुन्न संदेह ।
जन मलूक के धनि प्रभु, भ्रम काटो करि नेह ॥

हरि अनादि गति अवगति, निर्गुन सगुन प्रमान ।
भगतन के हितकारी प्रभु, प्रगटत प्रीति समान ॥

जो भाया सोई किया, करनहार समरत्थ ।
काइ़ वाकि मन ते परे, कहो न जाइ़ सकत्थ ॥

एकहिं अक्षर ते सकल, प्रकृति पुरुष विस्तार ।
कह मलूक बहु विधि जगत, नामहि है निस्तार ॥

कारन में कारज नहीं, कारन कारज माहिं ।
स्थित घट में मृतिका, मृतिका में घट नाहिं ॥

सब्द सरूपी पुरुष जो, करन करावन हार ।
जैसे का तैसा भया, अविगत अगम अपार ॥

यह घट के सदृस, दस इन्द्री दस द्वार ।
तिन के भीतर आहि मन, चंचल जल अनुहार ॥

जो जल थिर भए आत्मा, गगन सदृस दरसाइ ।
तासों दास मलूक कह, राखिब मनहिं लगाइ ॥

नित्य निमित्य प्राकृत, अंतक प्रलै समान ।
जैसे का तैसा रहा, कहै मलूक निर्वान ॥

पद निर्वानहिं को गहै, करे सहि सकै विसेष ।
रमित रूप नहिं लख परै, ताते नाम अलेख ॥

छोटो बड़ो न घटि बढ़ि, आपुहिं सब प्रकास ।
कहै मलूक अनादि हरि, साधन को विश्वास ॥

पावै पद निर्वाण सो, जीवन मुक्ति रिसाल ।
हरि संग हरि उर में रहै, हरि तेहि सदा दयाल ॥

निरंकार अविनासी, प्रनवउँ दुह कर जोरि ।
जाकी सरनि सदा सुख, भ्रमै नहीं मति मोरि ॥

मन के आज आनंद है, बैठे भगतन पास ।
इहै घरी लेखे परी, कहत मलूकादास ॥

ठाकुर को बिसराइ मन, भूलत सपन समाज ।
नाता लावत जागत में, आवत नाहीं लाज ॥

हरि के जनम कर्म गुन, गावत होत प्रकास ।
संकट निकट न आवई, कहत मलूकादास ॥

परान पियारा पाहुना, धरि एक बिलवा आइ ।
करिहौं सेवा भली विधि, न जानौ कब जाइ ॥

बहुत काल भरमत भए , खोजत ब्रह्म भुलान ।
आदि ब्रह्म हरि जागे, सूत्र सूत्र परवान ॥

ना मैं भूत न देह हौं, नहिं इन्द्री विस्तार ।
इनको मैं साक्षी सदा, याको नाम विचार ॥

रहौं भरोसे राम के, बनिजहि कबहूँ न जाउँ ।
दास मलूका यों कहैं, हरि बिरवै मैं खाउँ ॥

माला जपौं न कर जपौं, जिभ्या कहौं न राम ।
सुमिरन मेरा हरि करैं, मैं पायो विश्राम ॥

ध्यान धारि गुरू–रूप को, काया कीजै भेंट ।
छूट जाय भय काल को, बाढ़ै हरि सों हेत ॥

प्रेम ग्यान जब होय दृढ़, रहै न भ्रम को लेस ।
तब मलूक संसै बिना, क्या देइ गरू उपदेस ॥

लघु दीरघ नहिं आतमा, सब में यों दरसाइ ।
नभ में घट ,घट माहिं नभ, घट मठ होइ न जाइ ॥

जब जीवै निज मान तजि, धरै रूप निज ध्यान ।
प्रेम भगति रस ऊपजै, सुनि अनहद–धुनि कान ॥

यह मलूक निरनै कियो, सकल शास्त्र–मत–सार ।
भव सागर के तरन को, नामै है आधार ॥

कह मलूक जब तें लइ, राम नाम की ओट ।
सोवत है सुख नींद भरि, डारि भरम की मोट ॥

नमो नमो पुनि पुनि नमो, नमो पुरुष भगवान ।
अर्ध नाम जाके तरे, जल ऊपर पषान ॥

मलूका संध्या तर्पन सब तजे, तीरथ कबहुं न जाहिं ।
हरि हीरा हिरदै बसे, तहि पैठि अन्हवाहिं ॥

सुनि श्री गुरु के वचन जिउ, लागो करन विचार ।
मन तारै मन बोरै, मनै उतारै पार ॥

भजि मुरारि के चरन, तजि अहमेव अहंकार ।
कहै मलूक या ते अधिक, नाहीं और विचार ॥

नमो जगत पति जगत गुरु, जगन्नाथ जग राइ ।
जगजीवन जग हित करन, जग मनि सो जदु राइ ॥

अभ्यास बिना पावै नहीं, सत चित ब्रह्म बिलाइ ।
ताते ब्रह्म अभ्यास से, ब्रह्म भउ होइ जाइ ॥

मन याके हैं रूप द्वै, एक कनक एक नार ।
दोउ सेति प्रीति तजि, हरि पद करु प्यार ॥

रे मन सूता क्या करै, उठि भज चरन मुरारि ।
जैसा सपना रैन का, तैंसा यह संसार ॥

राम सुमिरि रे मना, जो चाहत कुसलात ।
अटके जग जंजाल में, जन्म सिरानो जात ॥

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस ।
जिन के हिरदै हरि बसैं, कोटि तिरथ तिन पास ॥

जब आए तुम जगत में, तब हँसिया सब कोय ।
अब तुम ऐसी कर चलो, पाछे हँसी न कोय ॥

कल्पि डाहि जो लेत है, या तें पाप न और ।
कह मलूक तेहि जीव को, तीन लोक नहि ठौर ॥

जो मन गया तो जान दे, दृढ़ करि राखु सरीर ।
बिन जिह चढ़ी कमान का, क्या लागेगा तीर ॥

गौतम नारि बड़ी पतिबरता, बहुत कीन्हे दाना ।
करनी करि बैकुंठ न पैठी, काहे भई पषाना ॥

तन मन धन नहिं आपना, नहिं सुत और नारी ।
बिछुरत बार न लागई, जिय देखु बिचारी ॥